International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 4.561 Volume 2, Issue 08, Aug 2015
Website- www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com

महादेवी वर्मा जी की काव्य कृत्ति सांध्य गीत का अध्ययन

डॉ सिद्धि जोशी

सह-आचार्य हिन्दी

राजकीय कन्या महाविद्यालय, झुंझुनूं

सारः

महादेवी वर्मा जी मूलतः एक कवयित्री तथा छायावाद के चार आधार स्तम्भों में से एक के रूप में प्रसिद्ध थीं। करुणा एवं भावुकता उनके व्यक्तित्व के अभिन्न अंग हैं। साहित्य को इनकी देन मुख्यतया एक कवि के रूप में है, किन्तु इन्होंने प्रौढ़ गद्य लेखन द्वारा हिन्दी भाषा को सजाने-सँवारने तथा अर्थदगाम्भीर्य प्रदान करने में जो योगदान किया है, वह भी प्रशंसनीय है। उनकी रचनाएँ सर्वप्रथम 'चाँद' नामक पत्रिका में प्रकाशित हुईं। तत्पश्चात् उन्हें एक प्रसिद्ध कवयित्री के रूप में ख्याति प्राप्त हुई। महादेवी वर्मा की कविताओं में हृदय को मथ देनेवाली जितनी हृदय विदारक पीड़ाएँ चित्रित की गई हैं, वे अद्वितीय मानी जाती हैं। उनकी सूक्ष्म संवेदनशीलता, परिष्कृत सौंदर्य रुचि, समृद्ध कल्पना-शक्ति और अभूतपूर्व चित्रात्मकता के माध्यम से प्रणयी मन की स्वर लहरियाँ गीतों में व्यक्त हुई हैं। आधुनिक हिन्दी काव्य में शायद ही कोई उनकी तुलना कर सके। अपनी अंतर्मुखी मनोवृत्ति एवं नारीसुलभ गहरी भावुकता के कारण उनके द्वारा रचित काव्य में रहस्यवाद, वेदना एवं सूक्ष्म अनुभूतियों के कोमल तथा मर्मस्पर्शी भाव मुखरित हुए हैं। महादेवी का गद्य-साहित्य भी कम महिमामय नहीं है। उनके चिन्तन के क्षण, स्मरण की घड़ियाँ तथा अनुभूति और कल्पना के पल गद्य-साहित्य में भी साकार हुए हैं। उनकी आस्था, उनका तप, उनकी उग्रता तथा संयम, और दृष्टि की निर्मलता ने मिलकर उनके गद्य को हिन्दी का गौरव बना दिया है। इस प्रकार, चाहे पद्य हो या गद्य, महादेवी

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

वर्मा जी हिंदी साहित्य में उच्चतम स्थान की अधिकारिणी हैं। उनकी लेखनी ने न केवल साहित्य को समृद्ध किया है, बल्कि पाठकों के मन में एक स्थायी छाप छोड़ी है।

मुख्य शब्द ***:-*** *काव्य, गीत, कवयित्री*

प्रस्तावना

महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 ई. में उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद शहर में हुआ। इनकी प्रारंभिक शिक्षा इंदौर में हुई। 1916 ई. में विवाह के कारण इनकी शिक्षा कुछ समय के लिए बाधित हुई, परंतु 1919 ई. में इन्होंने पुनः क्रास्वेट कॉलेज, प्रयाग से अपनी पढ़ाई प्रारंभ की। 1933 ई. में प्रयाग विश्वविद्यालय से ही संस्कृत विषय में एम.ए. करके ये प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्य नियुक्त हुई और तब से वहीं कार्य करती रहीं। बाद में ये लम्बे अर्से तक प्रयाग महिला विद्यापीठ की कुलपति भी रहीं।

बचपन में ही अपनी सखी सुभद्रा कुमारी चौहान, जो इनसे कुछ बड़ी थी, की प्रेरणा पाकर इन्होंने जो लेखन कार्य आरंभ किया, वह मृत्युपर्यन्त अनवरत रूप से जारी रहा। इन्होंने हिन्दी साहित्य के कई दौर देखे और छायावादी काव्य के चार प्रमुख आधार स्तम्भों में से एक के रूप में जानी जाती हैं। इन्हें अपनी कविताओं में दर्द व पीड़ा की अभिव्यक्ति के कारण 'आधुनिक मीरा' भी कहा जाता है। इनका निधन 1987 ई. में हुआ।

महादेवी वर्मा जी मूलतः एक कवयित्री तथा छायावाद के चार आधार स्तम्भों में से एक के रूप में प्रसिद्ध थीं। करुणा एवं भावुकता उनके व्यक्तित्व के अभिन्न अंग हैं। साहित्य को इनकी देन मुख्यतया एक कवि के रूप में है, किन्तु इन्होंने प्रौढ़ गद्य-लेखन द्वारा हिन्दी भाषा को सजाने-सँवारने तथा अर्थदृगाम्भीर्य प्रदान करने में जो योगदान किया है, वह भी प्रशंसनीय है।

इनकी रचनाएँ सर्वप्रथम 'चाँद' नामक पत्रिका में प्रकाशित हुईं। तत्पश्चात् इन्हें एक प्रसिद्ध कवयित्री के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त हुई। "हृदय को मथ देनेवाली जितनी हृदय विदारक पीड़ाएँ कवयित्री द्वारा चित्रित की गई हैं, वे अद्वितीय ही मानी जाएँगी। सूक्ष्म संवेदनशीलता, परिष्कृत सौन्दर्य रुचि, समृद्ध कल्पना-शक्ति और अभूतपूर्व चित्रात्मकता के माध्यम से प्रणयी मन की जो स्वर-लहरियाँ गीतों में व्यक्त हुई हैं, आधुनिक क्या सम्पूर्ण हिन्दी काव्य में उनकी तुलना शायद ही किसी से की जा सके।"

अपनी अन्तर्मुखी मनोवृत्ति एवं नारी-सुलभ गहरी भावुकता के कारण उनके द्वारा रचित काव्य में रहस्यवाद, वेदना एवं सूक्ष्म अनुभूतियों के कोमल तथा मर्मस्पर्शी भाव मुखरित हुए हैं। महादेवी का गद्य-साहित्य कम महिमामय नहीं है। उनके चिन्तन के क्षण, स्मरण की घड़ियाँ तथा अनुभूति और कल्पना के पल गद्य-साहित्य में भी साकार हुए हैं। उनकी आस्था, उनका तप, उनकी उग्रता तथा संयम, दृष्टि की निर्मलता ने मिलकर उनके गद्य को हिन्दी का गौरव बना दिया।

इस प्रकार, पद्य हो या गद्य, महादेवी जी हिंदी साहित्य में उच्चतम स्थान की अधिकारिणी हैं। उनकी काव्य और गद्य रचनाएँ एक ओर जहां भारतीय साहित्य को समृद्ध करती हैं, वहीं दूसरी ओर वे भावुकता और संवेदनशीलता के प्रतीक के रूप में भी उभरती हैं। महादेवी वर्मा का साहित्यिक योगदान न केवल उनकी कविता और गद्य रचनाओं में प्रतिबिंबित होता है, बल्कि उनके शिक्षण और सामाजिक योगदान में भी देखा जा सकता है। उनकी साहित्यिक यात्रा और उनके द्वारा चित्रित पीड़ा और संवेदनशीलता की गहराई ने उन्हें हिंदी साहित्य के इतिहास में एक अद्वितीय स्थान दिलाया है।

व्यक्ति अपनी अंतर्बाह्य क्रिया-प्रतिक्रियाओं को संजोता रहता है। इस प्रक्रिया में उसे किसी सत्य की उपलब्धि होती है। समग्र रूप में यह उपलब्धि या अनुभूति ही व्यक्ति के समूचे अस्तित्त्व की परिचायक होती है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी ज्ञानेंद्रियों के सहारे कुछ तथ्यों की उपलब्धि करता हैं और कुछ बातों की उपलब्धियों के सहारे स्मरण करता है। इन्हीं उपलब्धियों और स्मृतियों के ताने- बाने से व्यक्ति की दुनिया बनती है, जो उसकी अपनी होती है और अन्य लोगों से भिन्न हैं। वस्तुतः यही उसका व्यक्तित्व होता है ।

किसी भी साहित्यकार के कृतित्व को उसके व्यक्तिगत जीवन एवं अनुभवों से पृथक करके नहीं देखा जा सकता । डॉ. शोभनाथ यादव के मतानुसार, "व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों परस्पर एक दूसरे के निर्भर एवं पूरक है। प्रत्येक काव्य-सृजन और कृतित्व कवि या साहित्यकार के व्यक्तित्व की ही प्रतिच्छाया और उसका प्रसार होता है। कवि का व्यक्तित्व अपने ही अनुरूप विशिष्ट शैलियों और माध्यम उपकरणों का चयन करता है।" इस तरह साहित्यकार के कृतित्व में उसके व्यक्तित्व की झलक मिल जाती है।

लेखक के विचार, उसकी भावनाएँ और संवेदनाएँ उसके जीवन की प्रतिच्छाया होती हैं। कोई भी लेखक अपने समय की परिस्थितियाँ एवं यथार्थ से प्रेरीत होकर ही साहित्य सृजन कर सकता है। साथ ही कलाकार का व्यक्तित्व ही उसकी कृतित्व में उतरता है । उसके व्यक्तित्व के अंतर्गत शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक एवं व्यावहारिक विशिष्टताओं का समाहार होता हैं । सही व्यक्तित्व पाठक को दिव्य दृष्टि प्रदान कर आनंद की उपलब्धि करता है ।

प्रमुख कृतियाँ :

महादेवी वर्मा हिन्दी साहित्य में कवयित्री के रूप में अधिक प्रसिद्ध हैं, फिर भी उन्होंने अपनी लेखनी से रेखाचित्र एवं संस्मरण साहित्य के रूप में हिन्दी गद्य साहित्य की भी वृद्धि श्री की है। इसलिए महादेवी वर्मा जी उच्चकोटि की गद्य लेखिका भी हैं। महादेवी के निबंध मुख्यतः विचार प्रधान एवं विवेचानत्मक हैं। महादेवी जी ने अपने लंबे रचनाकाल में कई अनमोल कृतियाँ दी हैं। उन्होंने साहित्य की अधिकांश विधाओं में रचनाएँ की हैं। ये रचनाएँ पद्य और गद्य दोनों में रचे गये हैं।

काव्य संग्रहः रचनाएँ निहार (1930), रश्मि (1932), नीरजा (1934), सान्धयगीत (1936), यामा (1940), दीपशिखा (1942), सप्तपर्णा (1960), अग्निरेखा (1990)।

गद्य साहित्यः अतीत के चलचित्र (1941), स्मृति की रेखाएँ (1943), पथ के साथी (1956), क्षणदा, मेरा परिवार (1972) और परिक्रमा । निबंध संग्रहः श्रृंखला की कड़ियाँ विवेचनात्मक गद्य, साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध, संकल्पिता, हिमालय पत्रिका 'चाँद' पत्रिका का संपादन लंबे अरसे तक किया ।

उद्देश्य

1. महादेवी के विचारों का अध्ययन 'सांध्य गीत' के माध्यम से करने के लिए
2. महादेवी वर्मा की साहित्यिक विशेषताओं का अध्ययन करने के लिए

साहित्यिक सर्वेक्षण:

डॉ. पालीवाल के मतानुसार - "सांध्यगीत उनकी चरम साधना का काव्य **है ।** टेकनीक और कण्टेन्ट की दृष्टि से इस काव्य-संकलन के दीप्तिमय अंश बहुत है । छायावाद और रहस्यवाद की धूप-छाही डोरी में बंधा हुआ यह काव्य आधुनिक प्रगीत-काव्य के इतिहास में एक अद्‌भुत उपलब्धि है ।" इस प्रकार 'सांध्यगीत' काव्य, संगीत औरत चित्र के समन्वित स्वरूप से आलोकित है । उसमें संकलित अनेक रचनाओं में कवयित्री की सुखद साधना की अनुभूति व्याप्त है ।

डॉ० नगेंद्र के शब्दों में "महादेवी के काव्य में हमें छायावाद का अभिमिश्रित रूप मिलता है । तितली के पंखों, फूलों की पंखुरियों से चुराई हुई कला और इन सबसे ऊपर स्वप्न-सा बुना हुआ एक वायवीय वातावरण- ये सभी तत्व जिसमें घुले-मिले रहते हैं वह है महादेवी की कविता | डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी तो उनके काव्य की पीड़ा को मीरा की काव्य-पीड़ा से भी बढकर मानते हैं। महादेवी जी मूलतः एक कवयित्री थी तथा छायाबाद के चार आधार स्तम्भों में से एक के रूप में प्रसिद्ध थीं जहाँ उनका काव्य संवेदना, भाव संगीत एवं चित्र का अद्‌भुत संगम है, वहीं बहुत से आलोचकों के मत में उनका गद्य साहित्य अपेक्षाकृत अधिक प्रखर एवं अनुभूति प्रवण है। हालांकि उनके गद्य में भी उनके कवि हृदय के ही दर्शन होते हैं।

अध्ययन पद्धति :

यह अध्ययन मुख्य रूप से वर्णन एवं विश्लेपण पर आधारित है । साथ ही ऐतिहासिक अध्ययन पद्धति के आधार पर विभिन्न संस्थाओं, कार्यालयों एवं पुस्तकालयों से तथ्यों का संकलन किया गया है । वर्तमान अध्ययन मुख्य रूप से द्वैतियक स्रोत पर ही आधारित है ।

विश्लेष्ण

'सांध्यगीत' :

महादेवी के चतुर्थ काव्य-संग्रह 'सांध्यगीत' में 45 गीत संगृहित हैं। 1934 से 1936 ई. तक की अवधि में लिखें गीतों के संकलन का प्रकाशन 1936 ई. में हुआ। इस कृति में भी चिंतनप्रधान भावानुभूतियों की विशेष अवस्थिति है। महादेवी 'सांध्यगीत' की भूमिका में इसे स्पष्ट करती हुई कहती है- 'नीरजा' और 'सांध्यगीत' मेरी उस मानसिक स्थिति को व्यक्त कर सकेंगे जिसमें अनायास ही मेरा हृदय सुख-दुःखमें सामंजस्य का अनुभव करने लगा। पहले बाहर खिलने वाले फूल को देखकर मेरे रोम-रोम में ऐसा पुलक दौड़ जाता था मानों वह मेरे हृदय में एक अव्यक्त वेदना भी थी। फिर वह सुख - दुःख और अब अंत में न जाने कैसे मेरे मन में उस बाहर भीतर में एक सामंजस्य सा ढूँढ़ लिया है, जिसने सुख-दुःख को इस प्रकार बुन दिया कि एक के प्रत्यक्ष अनुभव के साथ दूसरे का अप्रत्यक्ष आभास मिलता रहता है । महादेवी के उक्त विचारों का सटीक उदाहरण 'सांध्य गीत' का यह पहला गीत है -

"प्रिय ! सांध्य गगन, मेरा जीवन । ...

साधों का आज सुनहलापन

घिरता विषाद का तिमिर सघन

सांध्य का नभ से मूक मिलन

यह अश्रुमयी हँसती चितवन ।"॥

विहर- साधना में लीन कवयित्री जब वेदना की भाव- -भूमि पर पहुँचती है तब उसकी आकुलता तन्मय राधा बन जाती है और उसका विरह (साधना) ही आराध्य (साध्य) बन जाता है ।

"आकुलता ही आज हो गई तन्मय राधा,

विरह बना आराध्य द्वैत क्या कैसी बाधा ।

खोना-पाना हुआ जीत वे हारें ही हैं । "।।

उस तादात्म्य की चरमावस्था में हार-जीत, खोना - पाना सब समरस हो जाते हैं ।

सुख-दुःख, नाश-विकास, विरह-मिलन सभी सापेक्ष हैं और एक दूसरे के पूरक हैं। निरंतर चिंतन-मनन करने वाली साधना - रत आत्मा की गरिमा इनमें कोई अंतर नहीं देखती -

"मैं सजग चिर साधना ले !...

विरह का युग आज दीखा मिलन के लधु पल सरीखा

दुःख सुख में कौन तीखा मैं न जानी औ न सीखा मधुर मुझको हो गए सब मधुर प्रिय की भावना ले । "

"सजनि ! **अन्तहित हुआ है 'आज' में धुंधला विफल 'कल'**

हो गया है मिलन एकाकार मेरे विरह में मिल;"

सांध्यगीत में महादेवी स्वयं विरह-व्यथित होते हुए भी विश्व के करूण-क्रन्दन से तटस्थ नहीं रह पाती । संतप्त जन पर अपनी ममता बिखरा कर, उनके आँसुओं का क्षार लेकर उन्हें अपना स्नेह - रस देने में वे रंचमात्र भी संकुचित नहीं होती-

"**आँसुओं का क्षार पी मैं बाँटती नित स्नेह का रस !**

सुभग मैं उतनी मधुर हूँ, मधुर जितना प्रात । "

साहित्यिक विशेषताएँ :

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

महादेवी वर्मा रहस्यवाद और छायावाद की कवयित्री थीं, अतः उनके काव्य में आत्मा-परमात्मा के मिलन विरह तथा प्रकृति के व्यापारों की छाया स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है । वेदना और पीड़ा महादेवी जी की कविता के प्राण रहे। उनका समस्त काव्य वेदनामय है। उन्हें निराशावाद अथवा पीड़ावाद की कवयित्री कहा गया है। वे स्वयं लिखती हैं, दुःख मेरे निकट जीवन का ऐसा काव्य है, जिसमें सारे संसार को एक सूत्र में बाँध रखने की क्षमता है। इनकी कविताओं में सीमा के बंधन में पड़ी असीम चेतना का क्रंदन है। यह वेदना लौकिक वेदना से भिन्न आध्यात्मिक जगत की है, जो उसी के लिए सहज संवेद्य हो सकती है, जिसने उस अनुभूति क्षेत्र में प्रवेश किया हो। वैसे महादेवी इस वेदना को उस दुःख की भी संज्ञा देती हैं, "जो सारे संसार को एक सूत्र में बाँधे रखने की क्षमता रखता है किंतु विश्व को एक सूत्र में बाँधने वाला दुःख सामान्यतया लौकिक दुःख ही होता है, जो भारतीय साहित्य की परंपरा में करुण रस का स्थायी भाव होता है। महादेवी ने इस दुःख को नहीं अपनाया है। वे कहती हैं, "मुझे दुःख के दोनों ही रूप प्रिय हैं। एक वह जो मनुष्य के संवेदनशील हृदय को सारे संसार से एक अविच्छिन्न बंधनों में बाँध देता है और दूसरा वह, जो काल और सीमा के बंधन में पड़े हुए असीम चेतना का क्रंदन है किंतु उनके काव्य में पहले प्रकार का नहीं, दूसरे प्रकार का 'क्रंदन' ही अभिव्यक्त हुआ है यह वेदना सामान्य लोक हृदय की वस्तु नहीं है। संभवतः इसीलिए रामचंद्र शुक्ल ने उसकी सच्चाई में ही संदेह व्यक्त करते हुए लिखा है, "इस वेदना को लेकर उन्होंने हृदय की ऐसी अनुभूतियाँ सामने रखीं, जो लोकोत्तर हैं । कहाँ तक वे वास्तविक अनुभूतियाँ हैं और कहाँ तक अनुभूतियों की रमणीय कल्पना, यह नहीं कहा जा सकता", । इसी आध्यात्मिक वेदना की दिशा में प्रारंभ से अंत तक महादेवी के काव्य की सूक्ष्म और विवृत्त भावानुभूतियों का विकास और प्रसार दिखाई पड़ता है।

इन्होंने अपनी गद्य रचनाओं में भी अनुभूति की गहराई के साथ उपेक्षित प्राणियों के चित्र अपनी करुणा से रंजित कर इस प्रकार प्रस्तुत किए हैं कि पाठक उनके साथ आत्मीयता का अनुभव करने लगता है। पथ के साथी में उन्होंने अपने युग के प्रमुख साहित्यकारों के अत्यन्त व्यक्ति चित्र संकलित किए हैं तो 'श्रृंखला की कड़ियों में आधुनिक नारी की समस्याओं को सुलझाने के उपायों का निर्देश दिया है । महादेवी छायावाद के कवियों में औरों से भिन्न अपना एक विशिष्ट और निराला स्थान रखती हैं। इस विशिष्टता के दो कारण हैं एक तो उनका कोमल हृदया नारी होना

और दूसरा अंग्रेजी और बंगला के रोमांटिक और रहस्यवादी काव्य से प्रभावित होना। इन दोनों कारणों से एक ओर तो उन्हें अपने आध्यात्मिक प्रियतम को पुरुप मानकर स्वाभाविक रूप में अपना स्त्री - जनोचित प्रणयानुभूतियों को निवेदित करने की सुविधा मिली, दूसरी ओर प्राचीन भारतीय साहित्य और दर्शन तथा संत युग के रहस्यवादी काव्य के अध्ययन और अपने पूर्ववर्ती तथा समकालीन छायावादी कवियों के काव्य से निकट का परिचय होने के फलस्वरुप उनकी काव्याभिव्यंजना और बौद्धिक चेतना शत-प्रतिशत भारतीय परंपरा के अनुरूप बनी रही। इस तरह उनके काव्य में जहाँ कृष्ण भक्ति काव्य की विरह - भावना गोपियों के माध्यम से नहीं, सीधे अपनी आध्यात्मिक अनुभूति की अभिव्यक्ति के रूप में प्रकाशित हुई हैं, वहीं सूफी पुरुष कवियों की भाँति उन्हें परमात्मा को नारी के प्रतीक में प्रतिष्ठित करने की आवश्यकता नहीं पड़ी।

प्रकृति चित्रणः

अन्य रहस्यवादी और छायावादी कवियों के समान महादेवी जी ने भी अपने काव्य में प्रकृति के सुंदर चित्र प्रस्तुत किए हैं। उन्हें प्रकृति में अपने प्रिय का आभास मिलता है और उससे उनके भावों को चेतना प्राप्त होती है।

वे अपने प्रिय को रिझाने के लिए प्रकृति के उपकरणों से अपना श्रृंगार करती हैं-

शशि के दर्पण में देख-देख मैंने सुलझाए तिमिर केश ।

गूँथे चुन तारक पारिजात, अवगुंठन कर किरणें अशेष ।

छायावाद और प्रकृति का अन्योन्याश्रित संबंध रहा है। महादेवी जी के अनुसार- 'छायावाद की प्रकृति, घट - कूप आदि से भरे जल की एकरूपता के समान अनेक रूपों से प्रकट एक महाप्राण बन गई। स्वयं चित्रकार होने के कारण उन्होंने प्रकृति के अनेक भव्य तथा आकर्षक चित्र साकार

© **Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

किए हैं। महादेवी जी की कविता के दो कोण हैं- एक तो उन्होंने चेतनामयी प्रकृति का स्वतंत्र विश्लेपण किया है-'

'कनक से दिन मोती सी रात, सुनहली सांझ गुलाबी प्रात

मिटाता रंगता बारंबार कौन जग का वह चित्राधार?' अथवा 'तारकमय नव बेणी बंधन शीश फूल पर शशि की नूतन रश्मि वलय सित अवगुंठन धीरे-धीरे उतर क्षितिज से आ वसंत रजनी ।'

दूसरा प्रकृति को भाव-जगत का अंग मानकर उन्होंने मुख्यतः रहस्य साधना का चित्रण किया है। कवयित्री को अनंत के दर्शन के लिए क्षितिज के दूसरे छोर को देखने की जिज्ञासा है-

'तोड़ दो यह क्षितिज मैं भी देख लूँ उस ओर क्या है?

जा रहे जिस पथ से युगलकल्प छोर क्या है?"

उन्होंने समस्त भावनाओं और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति प्रकृति के माध्यम से की है। सांध्यगीत' में वे अपने जीवन की तुलना सांध्य - गगन से करती हैं-

'प्रिय सांध्य गगन मेरा जीवन यह क्षितिज बना धुँधला विराग

नव अरुण अरुण मेरा सुहाग छाया-सी काया वीतराग' कल्पना, भावना और पीड़ा

महादेवी जी की सृजन - प्रक्रिया विशुद्ध भावात्मक रही है। उनकी धारणाओं को युग के विभिन्न वाद परिवर्तित नहीं कर सके हैं। उन्होंने किसी एक दर्शन को केंद्र नहीं बनाया। जिसे जीवन अथवा समाज के लिए उपयुक्त समझा उसे आत्मसात कर लिया। महादेवी जी विशुद्ध रूप से भारतीय संस्कृति की पोपक होने के कारण उनकी समस्त काव्य कृतियों में उसका प्रभाव परिलक्षित होता है । महादेवी की कविता अनुभूति से परिपूर्ण है, पंत और निराला की कवितायें दार्शनिकता के बोझ से दब - सी गई हैं, किंतु महादेवी जी के काव्य में ऐसी बात नहीं । उसमें

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)

दार्शनिकता होते हुए भी सरसता है । वह सर्वत्र भावना प्रधान है। महादेवी जी के काव्य में संगीतात्मकता का विशेष गुण है। वे गीत लेखिका हैं। गीतों की लय छंदों पर उनका अद्‌भुत अधिकार हर जगह दिखाई देता है। वे महादेवी माधुर्य भाव की उपासिका हैं। ब्रह्म को उन्होंने प्रियतम के रूप में देखा है। अपने प्रेमपात्र के लिए उन्होंने 'प्रिय' संबोधन दिया है। उनके गीत उज्ज्वल प्रेम के गीत हैं। इसके द्वारा अपने अंतर की जिस सात्विकता का उन्होंने परिचय दिया है वह उनकी काव्य- गरिमा का आधार स्तंभ है। जब जीवन में दिव्य प्रेम के मधु संगीत के रागिनी झंकृत हुई तब कवयित्री के मन में उसने असंख्य नए स्वप्नों को जन्म दिया-

'इन ललचाई आँखों पर पहरा था जब व्रीड़ा का

साम्राज्य मुझे दे डाला उस चितवन ने पीड़ा का ।'

चिर तृपित आत्मा युग-युग से सर्वविश्वव्यापी परमात्मा से मिलन के लिए व्याकुल रही है। महादेवी जी की वेदनानुभूति संकल्पात्मक अनुभूति की सहज अभिव्यक्ति है। 'मिलन का मत नाम लो, मैं विरह में चिर हूँ' कहकर वे इसी विरह को जीवन की साधना मानती है। उन्होंने पीड़ा की महत्ता ही घोपित नहीं की उसका सुखद पक्ष भी स्पष्ट किया है। उनके सुख का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं हैं। जब दुःख अपनी अंतिम सीमा तक पहुँच जाता है तब वही दुःख सुख का रूप धारण कर लेता है ।

'चिर ध्येय यही जलने का ठंडी विभूति हो जाना

है पीड़ा की सीमा यह दुख का चिर सुख हो जाना'

छायावादी कहे जाने वाले कवियों में महादेवी जी ही रहस्यवाद के भीतर रही हैं। उस अज्ञात प्रियतम के लिए वेदना ही उनके हृदय का भावकेन्द्र है जिससे अनेक प्रकार की भावनाएँ, छूट छूटकर झलक मारती रहती हैं । वेदना से इन्होंने अपना स्वाभाविक प्रेम व्यक्त किया है, उसी के साथ वे रहना चाहती हैं। उसके आगे मिलनसुख को भी वे कुछ नहीं गिनतीं। वे कहती हैं कि ट मिलन का मत नाम ले मैं विरह में चिर हूँ। इस वेदना को लेकर इन्होंने हृदय की ऐसी अनुभूतियाँ

सामने रखी हैं जो लोकोत्तर हैं। कहाँ तक वे वास्तविक अनुभूतियाँ हैं आर कहाँ तक अनुभूतियों की रमणीय कल्पना है, यह नहीं कहा जा सकता । एक पक्ष में अनंत सुपमा, दूसरे पक्ष में अपार वेदना, विश्व के छोर हैं जिनके बीच उसकी अभिव्यक्ति होती है

यह दोनों दो ओरें थीं संसृति की चित्रपटी की

उस बिन मेरा दुख सूना मुझ बिन वह सुषमा फीकी ।

पीड़ा का चसका इतना है कि तुमको पीड़ा में ढूँढ़ा तुममें ढूँढूगी पीड़ा ।

वे दुःख को जीवन की स्फूर्ति तथा प्रेरणा तत्व मानती हैं। उनकी दृष्टि में वेदना का महत्व तीन कारणों से है- वह अंतःकरण को शुद्ध करती है। प्रिय को अधिक निकट लाती है और प्रियतम की शोभा भी उसी पर आधारित है। अतः उनके काव्य में दुःख के तीन रूप मिलते हैं निर्माणात्मक, करुणात्मक और साधनात्मक । वे बौद्धों के नैराश्यवाद को स्वीकार नहीं करतीं। उन्होंने दुःख को मधुर भाव के रूप में स्वीकार किया है जिसमें वह अलौकिक प्रिय के लिए दीप बनकर जलना चाहती है-

'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल

युग-युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल,

प्रियतम का पथ आलोकित कर ।'

उनके अनुसार दुःख जीवन का ऐसा काव्य है जो समस्त विश्व को एक सूत्र में बाँधने की क्षमता रखता है। उनका दुःख यष्टिपरक न होकर समष्टिपरक रहा है। उन्होंने कहा है व्यक्तिगत सुख विश्ववेदना में घुलकर जीवन को सार्थकता प्रदान करता है और व्यक्तिगत दुःख विश्व सुख में घुलकर जीवन को अमरत्व प्रदान करता है। उनका संदेश है-

महादेवी का रहस्यवादः

'मेरे हँसते अधर नहीं, जग की आँसू लड़ियाँ देखो, मेरे गीले पलक छुओ मत मुर्झाई कलियाँ देखो ।'

छायावादी काव्य में एक आध्यात्मिक आवरण तथा छाया रही है। अतः रहस्यवाद छायावादी कविता के प्रवृत्ति विशेष के लिए प्रयुक्त किया गया। महादेवी जी के अनुसार रहस्य का अर्थ वहाँ से होता है जहाँ धर्म की इति है । रहस्य का उपासक हृदय में सामंजस्यमूलक परमतत्व की अनुभूति करता है और वह अनुभूति परदे के भीतर रखते हुए दीपक के समान अपने प्रशांत आभास से उसके व्यवहार को स्निग्धता देती हैं।' महादेवी जी की रुचि सांसारिक भोग की अपेक्षा आध्यात्मिकता की ओर अधिक दर्शित होती हैं। रहस्यानुभूति की पाँच अवस्थाएँ उनके काव्य में लक्षित होती हैं। जिज्ञासा, आस्था, अद्वैतभावना, प्रणयानुभूति विरहानुभूति ।

महादेवी जी में उस परमत्व को देखने की, जानने की निरंतर जिज्ञासा रही हैं। वह कौतूहल से पूछती हैं-

'कौन तुम मेरे हृदय में

कौन मेरी कसक में नित मधुरता भरता अलक्षित ?'

उनकी अज्ञात प्रियतम के प्रति आस्था केवल बौद्धिक न होकर रागात्मक है-

'मूक प्रणय से सधुर व्यथा से स्वप्नलोक के से आह्वान

आए चुपचाप सुनाने तब मधुमय मुरली की तान ।'

आत्मा और परमात्मा के अद्वैततत्व के लिए 'बीन और रागिनी' का प्रतीक उनकी अभिनव कल्पना एक सुंदर उदाहरण है। उनकी यह भावना कोरे दार्शनिक ज्ञान या तत्व चिंतन पर आधारित नहीं है अपितु उसमें हृदय का भावात्मक योग भी लक्षित होता है-

'मैं तुमसे हूँ एक - एक है जैसे रश्मि प्रकाश

मैं तुमसे हूँ भिन्न-भिन्न ज्यों घन से तड़ित विलास ।'

महादेवी वर्मा जी की साहित्यिक विशेषताएं निम्नलिखित हैं: समाज का यथार्थ चित्रण:

महादेवी वर्मा जी ने अपने गद्य साहित्य में समकालीन समाज का यथार्थ चित्रण किया है। समाज के यथार्थ चित्रण के अन्तर्गत उन्होंने समाज के सुख-दुःख, गरीबी, शोपण आदि का यथार्थ वर्णन किया है। इनके रेखाचित्रों एवं संस्मरणों में समाज में फैली गरीबी, कुरीतियों, जाति-पाँति, भेदभाव, धर्म, सम्प्रदायवाद आदि विसंगतियों का यथार्थ के धरातल पर अंकन हुआ है। वे एक समाजसेवी लेखिका थीं। वे आजीवन साहित्य सेवा के साथ-साथ समाज का उद्धार करने में लगी रहीं।

निम्न वर्ग के प्रति सहानुभूतिः

महादेवी वर्मा जी के जीवन पर महात्मा बुद्ध, विवेकानंद स्वामी रामतीर्थ आदि के विचारों का गहरा प्रभाव था, जिसके कारण उनकी निम्न वर्ग के प्रति गहन सहानुभूति रही है। उनके गद्य साहित्य में समाज के पिछड़े वर्ग के अत्यन्त मार्मिक चित्र चित्रित हैं। उन्होंने समाज उच्च वर्ग द्वारा उपेक्षित कहे जाने वाले लोगों के प्रति संवेदना व्यक्त की है । यही कारण है कि उन्होंने अपने गय साहित्य में अधिकांश पात्र निम्न वर्ग से ग्रहण किए हैं । **मानवेतर प्राणियों के प्रति प्रेम भावनाः**

महादेवी जी केवल मनुष्यों से ही प्रेम नहीं करती थीं, अपितु अन्य मानवेतर प्राणियों से भी उनका गहरा लगाव था। उन्होंने अपने घर में भी कुत्ते, बिल्ली, गाय, नेवला आदि को पाता हुआ था। इनके रेखाचित्रों एवं संस्मरणों में इन मानवेतर प्राणियों के प्रति इनका गहन प्रेम और संवेदना संकृ त होता है। जैसे- "उसका मुख इतना छोटा था कि उसमें शीशी का निपल समाता ही नहीं था उस पर उसे पीना भी नहीं आता था । फिर धीरे-धीरे उसे पीना ही नहीं, दूध की बोतल पहचानना भी आ गया। आगन में कूदते फादते हुए भी भक्तिन को बोतल साफ करते देखकर वह दौड़ आती है और तरत चकित आंखों से उसे ऐसे देखने लगती, मानो वह कोई सजीव मित्र हो ।"

वात्सल्य भावना का चित्रण :

गद्य साहित्य में बासल्य भावना का अनूठा चित्रण हुआ है। उनको मानव ही नहीं मानवेतर प्राणियों से भी वत्सल प्रेम था वे अपने घर में पाले हुए कुत्ते, बिल्लियों, नेवला, गाय आदि प्राणियों की एक मां के सेवा करती यही सेवा भावना उनके रेखाचित्र और संस्मरणों में भी अभिव्यक्त हुई है । इसी भाव के मानस हिरणी की मृत्यु की घटना के बाद उन्होंने फिर कभी किसी अन्य हिरण - हिरणी को न पालने का निश्चय किया था ।

समाज सुधार की भावनाः

समाज सेवा भावना से ओत प्रोत महिला थी । उनके जीवन पर बुद्ध, विवेकानंद आदि विचारकों का प्रभाव पड़ा जिसके कारण उनकी वृत्ति समाज सेवा की ओर उन्मुख हो गई थी। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से समाज में फैली कुरीतियों, विसंगतियों, विडम्बनाओं आदि को उखाड़ने के भरपूर प्रयास किए हैं। इन्होंने अपने गद्य साहित्य में नारी शिक्षा का भरपूर समर्थन किया है तथा नारी शोषण, बाल-विवाह आदि का विरोध किया । उनके समाज सुधार संबंधी विचार उनके प्रायः सभी संस्मरणों में बिखरे पड़े हैं।

भाषा-शैली:

महादेवी जी संस्कृत भाषा की परास्नातक तथा छायाबाद की प्रमुख कवयित्री थीं। अतः इनकी भाषा प्रायः तत्सम् शब्दावली युक्त शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है। इनकी भाषा में व्याकरणिक शुद्धता, सरलता, सरसता व धारा प्रवाह का अविराम गुण सर्वत्र मौजूद है। इनके काव्य में माधुर्य गुण की प्रमुखता है, तो गद्य में प्रसाद व माधुर्य दोनों की इनका वाक्य विन्यास इनकी कुछ रचनाओं को छोड़कर प्रायः दीर्घ है, परंतु गंभीर व रोचक है। इनकी शैली के दो स्पष्ट रूप हैं- विचारात्मक और भावात्मक विचारात्मक गद्य में तर्क और विश्लेपण को प्रधानता है तथा भावात्मक गद्य में कल्पना और अलंकृत वर्णन को प्रधानता है। इनके गद्य में भी काव्यात्मकता के दर्शन होते हैं । इन्होंने विभिन्न आधुनिक बिम्बों को अपने साहित्य में प्रस्तुत किया है। करुण रस इनके साहित्य का प्रधान रस है । 'नीहार' में उनकी शैली प्रारंभिक अवस्था में है । इस प्रारंभिक अवस्था की शैली में भाव कम हैं, शब्द अधिक। 'नीरजा' की शैली में भाव और भाषा की समानता है ।

© **Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)**

'दीपशिखा' की रचना में उनकी शैली प्रौढ़ हो गई है और थोड़े शब्दों में बहुत कुछ कहने की क्षमता आ गई है।

रस, छंद, अलंकार, शिल्प और प्रतीकख्सम्पादन,

महादेवी की कविता वियोग श्रृंगार प्रधान है। वियोग के जैसे रहस्यमय चित्र उन्होंने अंकित किए हैं, वैसे अत्यंत दुर्लभ हैं। करुण रस की व्यंजना भी उनके काव्य में हुई है। उनके काव्य में सभी छंद मात्रिक हैं। और वे अपने आप में पूर्ण हैं। उनमें संगीत और लय का विशेष रूप से समावेश है। अलंकार योजना अत्यंत स्वाभाविक है और अलंकारों का प्रयोग भावों को तीव्रता प्रदान करने में सहायक सिद्ध हुआ है । (समानोक्ति, उपमा, रूपक, अलंकारों की अधिकता है। शब्दालंकारों की और महादेवी जी की विशेष रुचि नहीं प्रतीत होती फिर भी क्यों कि उनके गीत उनकी अव्यहत साहित्य-साधना के परिणाम हैं अतः कलागीतों के सभी शैल्पिक गुणों से युक्त हैं। उनके काव्य में छायावादी कविता के शिल्प विधान का सफल रूप द्रष्टव्य है । गीतिकाव्य के तत्व अनुभूति प्रवणता, आत्माभिव्यक्ति, संक्षिप्तता, भावान्वित, गेयता आदि उनके काव्य में पूर्णतः दर्शित होते हैं। उन्होंने स्वयं कहा है, 'सुख-दुःख की भावावेशमयी अवस्था का विशेष गिने-चुने शब्दों में वर्णन करना ही गीत है।' अभिव्यक्ति की कलात्मकता, लाक्षणिकता, स्थूल के स्थान पर सूक्ष्म उपमानों का ग्रहण, कोमलकांत पदावली, कल्पना का वैभव, चित्रात्मकता, प्रतीक विधान, बिंब योजना आदि कलातत्वों का उनकी कविता में पूर्ण अभिनिवेश है। उनकी शिल्प प्रतिभा अनुपम है । उनके अंतस का कलाकार कला के प्रति सर्वदा सचेष्ट रहा है।

निशा को धो देता राकेश चाँदनी में जब अलकें खोल कली से कहता यों मधुमास बता दो मधुमदिरा का मोल ।'

'दीप' महादेवी के काव्य का महत्वपूर्ण प्रतीक है। इसके अतिरिक्त बीन और रागिनी, दर्पण और छाया, धन और दामिनी, रश्मि और प्रकाश उनके काव्य में बार-बार आए हैं।

निष्कर्ष:

इस प्रकार हम देखते है कि 'सांध्यगीत' में जहाँ विरह-मिलन के घात - प्रतिघात हैं वही चिंतन और साधना की स्थिरता भी । बंधन और मुक्ति की कामना के साथ-साथ विश्व-वेदना में अपने सुख को लीन करने की भावना भी है। सांध्यगगन के विभिन्न रंगों के समान 'सांध्यगीत' के विभिन्न भाव भी राग-रंजित होकर जीवन को रंग देते है । महादेवी जी का कुछ प्रारंभिक कविताएँ ब्रजभाषा में हैं, किंतु बाद का संपूर्ण रचनाएँ खड़ी बोली में हुई हैं । महादेवी जी की खड़ी बोली संस्कृ त - मिश्रित है। वह मधुर कोमल और प्रवाह पूर्ण हैं । उसमें कहीं भी नीरसता और कर्कशता नहीं। वैसे महादेवी जी की भाषा सरल है, किंतु सूक्ष्म भावनाओं के चित्रण में वह संकेतात्मक होने के कारण कहीं-कहीं अस्पष्ट भी हो गई हैं। शब्द चयन अत्यंत सुंदर है, किंतु भाषा में कोमलता और मधुरता लाने के लिए कहीं-कहीं शब्दों का अंग-भंग अवश्य मिलता है। जैसे- आधार का अधार, अभिलापाओं का अभिलापें आदि । महादेवी जी की शैली में निरंतर विकास होता रहा है । वे छायावाद का मूल दर्शन सर्वात्मवाद को मानती है और प्रकृति को उसका साधन मानती हैं- 'छायावाद ने मनुष्य हृदय और प्रकृति के उस संबंध में प्राण डाल दिए जो प्राचीनकाल से बिंब प्रतिबिंब के रूप में चला आ रहा था, जिसके कारण मनुष्य को प्रकृ ति अपने दुःख में उदास और सुख में पुलकित जान पड़ती थी। उन्होंने छायावाद का विवेचन करते हुए प्रकृति के साथ रागात्मक संबंध का प्रतिपादन विशेष रूप से किया है। इसके साथ ही उन्होंने सूक्ष्म या अंतर की सौंदर्य वृत्ति के उद्‌घाटन पर बल दिया है भावों को मूर्त रूप देने में महादेवी जी अत्यंत कुशल थीं। उन्होंने अपनी कविताओं में प्रतीकों और संकेतों का आश्रय अधिक लिया है। अतः उनकी शैली कहीं-कहीं कुछ जटिल और दुरूह हो गई है और पाठक को कविता का अर्थ समझने में कुछ परिश्रम करना पड़ता है।

संदर्भ :

1. वर्मा, धीरेन्द्र (1985) हिंदी साहित्य का इतिहास, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी ।

2. शुक्ल, रामचन्द्र (संवत). हिन्दी साहित्य का इतिहास (उन्नीसवां संस्करण), नागरी प्रचारिणी सभा,वाराणसी ।

3. वाजपे, प्रो शुभदा (2006) पुष्पक (अर्ध - वार्षिक पत्रिका), अंक-6, कादम्बिनी क्लब हैदराबाद ।

4. डॉ0 नागेन्द्र (1990). मर्मकथा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।

5. मिश्र शिवकुमार - मार्क्सवादी साहित्य चिंतन मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी.**भोपाळ प्र.स. 1973 पृ. 390.**

6. सिंह त्रिभुवन - हिंदी उपन्यास शिल्प और प्रयोग हिंदी प्रचारक संस्थान **वाराणसी, प्र. स. 1973 पृ.321.**

7. सिंह कृपाशंकर - हिंदी रेखाचित्र उद्भव और विकास, विनोद पुस्तक प्रकाशन आगरा, प्र. स. 1964, पृ. 69

8. शर्मा राजरानी - हिंदी का संस्मरण साहित्य, शोध प्रबंध प्रकाशन, दिल्ली, प्र. स. पृ. 89

9. सिंह कृपाशंकर - हिंदी रेखाचित्र उद्भव और विकास, विनोद पुस्तक प्रकाशन आगरा, प्र.स. 1964. पृ.65

10. वर्मा महादेवी - अतीत के चलचित्र, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, सं.2000, प.16

11. शर्मा राजरानी - हिंदी का संस्मरण साहित्य, शोध प्रबंध प्रकाशन, दिल्ली, प्र. स. 1970 पृ. 31

12. जैन सुरेशकुमार - हिंदी और मराठी के रेखाचित्रों का तुलनात्मक अध्ययन, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं. पृ. 178

13. शर्मा राजरानी - हिंदी का संस्मरण साहित्य, शोध प्रबंध प्रकाशन, दिल्ली, प्र.स.1970 पृ. 89

14. वर्मा महादेवी - पथ के साथी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं2003, पृ. 11